भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2024

ISBN : 978 - 81 - 89435 - 66 - 0

मूल्य - 300/-

रचना - भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

वर्तमान भारतीय समाज के मूल्य

आराधना माहेश्वरी
सहायक आचार्य (समाज विज्ञान विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय समाज में सदा से मूल्यों आदर्शों और चिंतन की व्यवस्था रही है। मनुष्य की यह विशेषता है कि वह व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए लक्ष्य आदर्श और व्यवहार के प्रतिमान निर्धारित करता है और उन्हीं के अनुरूप अपना जीवन यापन करता है। पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हुए यह आदर्श परंपरा बन जाते हैं। प्रत्येक समाज के विचारने, अनुभूति करने और व्यवहार करने की परंपराओं की समन्वित व्यवस्था संस्कृति कहलाती है। मनुष्य जन्म से जैविक प्राणी है परंतु उसे सामाजिक प्राणी बनने के लिए समाज के नियम, संस्कार, शिक्षा और मूल्यों को आत्मसात करना पड़ता है। समाज में रहकर ही व्यक्ति बोलना, व्यवहार करना, अच्छे बुरे का भेदकरना आदि सीखता है। यह प्रक्रिया समाजीकरण कहलाती है। समाजीकरण के दौरान व्यक्ति जिन आदर्शों, विश्वासों, सिद्धांतों को अपनाता है वही उसके मूल्य बन जाते हैं। अतः समाजीकरण और मूल्य दोनों एक दूसरे से संबंधित है।

वैल्यू शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'vallere' शब्द से मानी जाती है जो किसी वस्तु की कीमत विशेषता गुण या उपयोगिता को व्यक्त करता है। मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता या सद्‌गुणों का समावेश है इसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में प्रभावशाली तथा विश्वसनीय बनकर उभरता है। मूल्य वे मानक या नैतिक व्यवहार की आचार संहिताएं हैं जो संस्कृति से निकली परंपराओं द्वारा पोषित तथा आत्म चेतना अथवा अंतः करण द्वारा संरक्षित होते हैं। मानव इनका आधार बनाकर अपनी जीवन शैली का निर्माण करता है और जीवन के आदर्शों को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

मूल्य शब्द बड़ा महत्वपूर्ण है। मनुष्य तथा समाज जीवन के हर आयाम से संबंधित इन मूल्यों के अनुसार कार्य एवं व्यवहार करता है। मूल्य दैनिक जीवन के व्यवहारों को नियंत्रित करता है। डॉ मुखर्जी के अनुसार मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएं एवं लक्ष्य हैं जिनका अंतरीकरण समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है समाज ही उसे सभ्य बनाता है, वह समाज से ही सीखता है। केवल सीखने की क्षमता उसकी अपनी होती है। समाज जीवन को सुरक्षित

सुविधाजनक एवं सभ्य बनाने के लिए मूल्य का निर्माण करता है क्योंकि मनुष्य समूह में रहता है इसलिए उसे किसी आचार संहिता का पालन करना पड़ता है ताकि शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके। मूल्य किसी विचार व्यवहार या वस्तु का वह महत्व है जिसे व्यक्ति और समाज वांछनीय मानता है।

मैकाइबर और पेज के अनुसार 'मूल्य वे आदर्श हैं जो समाज को वांछनीय प्रतीत होते हैं'।

क्लेनवर्ग के अनुसार 'मूल्य समाज के वे आदर्श हैं जिनके आधार पर व्यक्ति सही और गलत का निर्णय करता है।

अर्बन के अनुसार मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करें'।

कनिंघम के अनुसार 'शिक्षा मूल्य शिक्षा के उद्देश्य बन जाते हैं। इन्हीं के अनुसार व्यक्ति के उन गुणों योग्यताओं तथा क्षमताओं को विकसित किया जाता है जो वस्तुतः जीवन मूल्यों में निहित होते हैं'।

संक्षिप्त में मूल्य विमान दंड है जो किसी समाज में उपलब्ध साधनों एवं लक्षण के चयन में सहायता करते हैं तथा मानव व्यवहार का निर्धारण करते हैं।

सामाजिक मूल्यों के प्रकार

सामाजिक मूल्यों को कई भागों में बांटा जा सकता है-

(1) **नैतिक मूल्य** - सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, करुणा, सहिष्णुता

(2) **सांस्कृतिक मूल्य** - परंपराएं, रीति रिवाज, त्यौहार, भाषा, धर्म आदि

(3) **सामाजिक मूल्य** - सहयोग, समानता, भाईचारा, बंधुत्व, सेवा, भावना, शांति

(4) **राजनीतिक मूल्य** - लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार और कर्तव्य

(5) **आर्थिक मूल्य** - बचत, उत्पादन शीलता, परिश्रम मितव्ययिता

(6) **आध्यात्मिक मूल्य** - श्रद्धा, सहृदयता, विनम्रता, आस्तिकता आदि।

वर्तमान भारतीय समाज के मूल्य

देश काल व परिस्थितियां सामाजिक मूल्यों के निर्माण में योग देती हैं। प्राचीन भारतीय समाज के मूल्य एवं धर्म आध्यात्मिक पर आधारित थे। 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया' भारतीय सामाजिक जीवन का आदर्श था। सत्य अहिंसा प्रेम शांति सहानुभूति प्राचीन भारतीय समाज के आदर्श थे। आज के इस विज्ञान युग में भारतीय सामाजिक मूल्य धर्म से प्रभावित न होकर भौतिकता से प्रभावित है। वर्तमान युग में प्राचीन मूल्य पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है। परंपरागत एवं वर्तमान मूल्य में समन्वय स्थापित कर मध्य मार्ग अपनाना अधिक श्रेष्ठ सिद्ध हो सकता है क्योंकि आज भी भारत की अधिकांश जनता धर्म परायण है उनके

जीवन का हर क्षेत्र धर्म से संबंधित है। प्रत्येक सामाजिक एवं पारिवारिक कार्य का आधार आज भी धर्म ही है। अत: परंपरागत प्राचीन मूल्य एवं वर्तमान मूल्य को यथार्थता के धरातल पर रखकर उनके समन्वय पर बल दिया जाना चाहिए।

संक्षिप्त में वर्तमान भारतीय समाज के निम्नलिखित मूल्य हैं-

(1) धर्म-निरपेक्षता -प्राचीन भारतीय समाज में मानव-धर्म पर अत्यधिक जोर दिया जाता था। मनुस्मृति में स्पष्ट लिखा है-

धृति: क्षमा दमाऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह: ।
धीर्विद्या सत्मय क्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।।

अर्थात् धैर्य, क्षमा, दमन, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धीर, विद्या, सत्य और अक्रोध धर्म के दस लक्षण हैं। वास्तव में ये मानव जीवन के 'सार्वभौमिक मूल्य' हैं। भारतीय समाज चार वर्गों में विभक्त था - वर्ण क्रमानुसार थे-जन्म से वर्ण का कोई सम्बन्ध नहीं था। देश, विदेशी आततायियों का शिकार हुआ और धर्म के नाम पर वास्तव में जो सम्प्रदाय थे उदय हुए।

वर्तमान में भारत जैसे विशाल देश में हिन्दू, इस्लाम, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई आदि अनेक धर्म वास्तव में जो सम्प्रदाय हैं, के अनुयायी निवास करते हैं जिनकी पूजा, उपासना पद्धति भिन्न-भिन्न है। धर्म के नाम पर भारतवासियों के जीवन में विष घोला जा रहा है। फलत: स्वतन्त्रता पश्चात् हमारी सरकार ने देश को धर्म-निरपेक्ष घोषित किया और सरकार ने धर्म-निरपेक्षता की नीति अपनाई। जिसके अनुसार भारतीय संविधान के अनुसार भारत सरकार प्रत्येक नागरिक के साथ समान व्यवहार करेगी चाहे वह किसी भी धर्म, वर्ण, रंग, जाति का है।

भारतीय नागरिक अपने गुण, कर्म और योग्यता के आधार पर भारतीय शासन में सर्वोच्च पद प्राप्त कर सकेंगे, इसमें किसी जाति, धर्म विशेष को महत्त्व नहीं दिया जाएगा। अस्पृश्यता को संविधानुसार अपराध घोषित किया गया है। मानव-मानव सब समान हैं, सबको समानाधिकार प्राप्त हैं। धर्म-निरपेक्षता की नीति से तात्पर्य 'धर्म के विरुद्ध नहीं समझा' जाना चाहिए। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि भारत सरकार का कोई राज्य-धर्म नहीं होगा। समस्त धर्मावलम्बियों को अपने को मानने, प्रचार करने, उपासना करने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी तथा योग्यता के आधार पर किसी भी धर्म या जाति का व्यक्ति भारतीय शासन में सर्वोच्च पद पर आसीन हो सकेगा।

(2) सत्य, अहिंसा और धर्म -धर्म प्राण भारतीय समाज का यह प्राचीनतम मूल्य है। 'अहिंसा परमो धर्म:, यतो धर्मस्ततयो जय:' अर्थात् अहिंसा परम धर्म है, जहाँ धर्म होता है, वहाँ विजय होती है। 'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की ही विजय होती है। 'धारयेत इति धर्म:' जो धारण करने योग्य हो, वही धर्म है।

प्राचीन भारतीय समाज का प्राचीनतम सामाजिक मूल्य युग-युगों पश्चात्

आज भी सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किए हुए है। भारत एक धर्म प्राण देश है। भारतीय जनता के हर क्रिया–कलाप में धर्म दृष्टिगोचर होता है। जीवन से मृत्यु तक के मनु द्वारा निर्धारित 'षोडश संस्कार' भारतीय जनता के धर्म प्राण होने का जीता जागता उदाहरण है। सत्य, अहिंसा और धर्म की ध्वजा को भारतीय ऋषि–महर्षियों, साधु–सन्यासियों ने विदेशों तक फहराया है। परिणामतः भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार विदेशों तक में हुआ। वर्तमान युग में प्रातः स्मरणीय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी सत्य, अहिंसा और धर्म के सहारे भारत भू को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराया।

'जीओ और जीने दो' भारतवासियों को जन्मतः ही सिखाया जाता है। इस प्रकार सत्य, अहिंसा और धर्म भारतीय समाज का प्राण है और इस मूल्य में भारतीयों की पूर्ण निष्ठा है। हमारे प्राचीन शास्त्र सत्य, अहिंसा और धर्म के गुणगान से भरे पड़े हैं।

(3) सादगी और सरसता – 'सादा जीवन और उच्च विचार' किसी भी समाज या राष्ट्र को उन्नति के चरम शिखर पर पहुँचा सकता है। भारतीय ऋषियों ने उक्त सूत्र पर चलने पर बल दिया है। भारतीय समाज के आदर्श पुरुष, महावीर, बुद्ध, कृष्ण, राम सबने 'सादा जीवन और उच्च विचार' की श्रेष्ठता पर बल दिया।

मानव को बाह्य आड़म्बरों के स्थान पर आत्मिक उन्नति करनी चाहिए। बर्तमान में राष्ट्र–पिता महात्मा गाँधी इस सूत्र के ज्वलंत उदाहरण हैं। शासन के सर्वोच्च पद पर आसीन भारत के अनेक राष्ट्रपतियों ने भी इसकी महत्ता पर बल दिया। सादा जीवन व्यतीत करने के लिए त्याग की आवश्यकता पड़ती है, त्याग ही सफलता की कुन्जी है। अतः वतज़्मान भारतीय समाज का 'भौतिक आकर्षण से दूर रहना' तथा 'सादगी एवं सरल जीवन व्यतीत करना' मूल्य है।

(4) सामाजिक समानता – वर्तमान भारतीय सामाजिक मूल्यों में समानता का भी विशेष महत्व है। वैदिक काल में समाज चार वर्णों में विभक्त था। शूद्र को सबसे हेय दृष्टि से देखा जाता था। वर्ण कर्मानुसार होते थे। किन्तु धीरे–धीरे इस समाज व्यवस्था ने चिरन्ता रूप ले लिया और समाज में ऊँच–नीच, छोटे–बड़े की भावना पैदा हो गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति पश्चात् हमारी लोकतन्त्रीय सरकार ने प्रत्येक भारतीय नागरिक को समान अधिकार दिए हैं। प्रत्येक नागरिक कर्म करने के लिए शिक्षा, धर्म, सम्पत्ति, भाषण, लेखन आदि का सबको समान अधिकार प्राप्त है। संविधान निर्माताओं ने लिंग, जाति, धर्म, वर्ण के आधार पर भेद–भाव न किए जाने की बात स्वीकार की है। अनु. जाति/अनु. जनजाति एवं पिछड़ी जातियों को विशेष प्रोत्साहन देकर समान लाने का प्रयास किया जा रहा है। इस प्रकार वर्तमान भारतीय समाज समानता के मूल्य का पक्षधर है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–15 के अनुसार ''राज्य किसी भी जाति, धर्म, लिंग, स्थान या वर्ण के आधार पर नागरिकों में किसी भी

प्रकार का भेद–भाव नहीं करेगा।'' इस प्रकार भारत सरकार अपने समस्त नागरिकों को एक समान समझती है।

(5) विश्व-बन्धुत्व – प्राचीन काल से ही भारत विश्व बन्धुत्व का पक्षधर रहा है। वर्तमान भारतीय सामाजिक मूल्यों में विश्व–बन्धुत्व का प्रमुख स्थान है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सम्पूर्ण पृथ्वी ही मेरा परिवार है, भारतीय प्राचीन सामाजिक मूल्यों का नवीनतम नारा है। वर्तमान विज्ञान के युग में इस मूल्य का विशेष महत्व है। सम्पूर्ण विश्व घर–आँगन जैसा हो गया है। विश्व के समस्त देश पारस्परिक निर्भरता पर टिके हुए हैं। एक देश की आवश्यकता दूसरे देश से माल मँगाकर पूर्ण की जाती है। 'सह अस्तित्व एवं विश्व बन्धुत्व' विश्व की प्रगति का मुख्य आधार है। विश्व बन्धुत्व के स्वप्न को साकार करने हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ भी प्रयत्नशील है। संयुक्त राष्ट्र संघ अपनी विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से संसार की निरक्षरता, रोग, भय आदि दूर करने का प्रयास कर रहा है। विश्व बन्धुत्व की यह भावना भारतीय संस्कृति का प्राण है और देश की जनतान्त्रिक प्रणाली में इसका अपना विशेष महत्व है।

भारतीय समाजशास्त्री राधाकमल मुकर्जी के विचार

डॉ. राधाकमल मुकर्जी ने भारतीय समाजशास्त्रियों में भी एक विशेष स्थान प्राप्त नहीं किया है किन्तु इन्होंने तो अपने विचारों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करली है। मूल्यों की परिभाषा करते हुए इन्होंने लिखा है कि मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छायें या लक्ष्य हैं जिनका अन्तरीकरण (Internalization) सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा होता है और जो आगे चलकर प्रतीकात्मक अधिमानतायें, स्तर तथा अभिलाषायें बन जाती हैं।

अत: मूल्य व्यवस्था सामाजिक संगठन, सामाजिक अन्त:क्रिया तथा सामाजिक व्यवस्था के आधार पर होती है। सामाजिक जीवन, संघ तथा संस्थाओं आदि में जो व्यवहार–प्रतिमान हमें दृष्टिगोचर होते हैं, सभी सामाजिक मूल्यों पर ही निर्मित होते हैं। डॉ. मुकर्जी के अनुसार सामाजिक मूल्यों को भी एक प्रकार का सन्तुलन होता है। यह सन्तुलन चार प्रकार के सामाजिक संगठनों में मिला है।

(1) भीड़ में अति श्रेष्ठ तथा अमानवीय व्यवहार का प्रदर्शन किया जाता है।

(2) दूसरे प्रकार के आर्थिक हित समूह (Economic Interest Groups) होते हैं जिनमें आपस में आथिज़्क आदान–प्रदान सम्बन्धी नियम और मूल्य होते हैं।

(3) समाज या समुदाय में न्याय तथा भ्रातृत्व की भावनाओं का प्रदर्शन होता है।

(4) सामान्य जीवन–आदर्श जिनमें स्वाभाविक प्रेम, सहानुभूति तथा सहयोग

की भावनाओं का बाहुल्य पाया जाता है।

डॉ. राधाकमल मुकर्जी ने यह स्वीकार किया है कि सामाजिक व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों के साथ-साथ अवमूल्य (Disvalue) भी जुड़े रहते हैं। समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो सामाजिक मूल्यों की अवहेलना करते रहते हैं, मूल्यों का विरोध तथा उनका निरन्तर उल्लंघन करते रहते हैं। अत: ऐसे लोग समाज के प्रति, रोष, विनाश, शोषण तथा अपराध आदि करते रहते हैं। ऐसे लोगों को समाज विरोधी मूल्यों को ही डॉ. मुकर्जी ने अवमूल्य बताया है। इन्होंने समाज के आदर्शों, लक्ष्यों, आदर्श-नियमों तथा सामाजिक मूल्यों में विशेष अन्तर किया है। इनके अनुसार मानव जीवन के अनेक, आदर्श तथा लक्ष्य हो सकते हैं। ये आदर्श या लक्ष्य प्रारम्भ में सामुदायिक कल्याण की दृष्टि से अपूर्ण होते हैं और वे समाज में वांछनीय प्रकार्थ अर्थात् समाज की सुरक्षा व्यवस्था तथा एकता प्रदान नहीं कर पाते हैं। किन्तु जब इनमें सम्पूर्ण समाज के सदस्यों को समान रूप से कल्याण करने की भावना आ जाती है तो ये ही आदर्श सामाजिक मूल्यों का स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं।

डॉ. मुकर्जी वैयक्तिक जीवन में व्यक्ति के विकास के लिए भी मूल्यों के योगदान के महत्व को स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार समाज में आदर्शों की स्थापना मूल्यों के आधार पर ही की जाती है। भारतीय समाज में सत्यं, शिवं, सुन्दरम् के आदर्श काल से चला आ रहा है। इसी सुन्दरता, अच्छाई तथा कल्याण आदि मूल्यों को व्याख्या भी समय-समय पर सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित भी होती रहती है।

मूल्यों का महत्व

1. मूल्यों के माध्यम से आदर्श नागरिक का विकास हो सकता है।
2. मूल्यों द्वारा बालक अपने धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का निर्वाह पूरा कर सकता है।
3. सामाजिक व्यवहारों को समझने के लिए मूल्यों का अध्ययन आवश्यक है।
4. मूल्य सामाजिक सम्बन्धों को सन्तुलित करने तथा सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता लाने में सहायक होते हैं।
5. व्यक्ति और समूह की क्षमता का मूल्यांकन मूल्यों के आधार पर ही किया जाता है।
6. मूल्यों द्वारा व्यक्ति में यह जानने की क्षमता उत्पन्न होती है कि दूसरे लोगों की निगाह में उनका क्या स्थान है।
7. मूल्यों में आदर्श निहित होते हैं इसलिए उन्हें सामाजिक स्वीकृति या अनुमति प्राप्त होती है। मूल्यों को समूह के आदर्श विचारों तथा व्यवहारों का प्रतीक माना जाता है।

8. मूल्यों के कारण भौतिक संस्कृति का महत्व बढ़ता है। भौतिक संस्कृति के कुछ तत्व चाहे महत्त्वपूर्ण न हों किन्तु उनके पीछे सामाजिक मूल्य होते हैं, फलस्वरूप लोग उन वस्तुओं में रुचि लेने लगते हैं। कार, टेलीफोन या टेलीविजन कुछ व्यक्तियों के लिए आवश्यक न होने पर भी वे इन्हें इसलिए रखना चाहते हैं कि इनसे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है। यह इसलिए क्योंकि सामाजिक मूल्य इन वस्तुओं को उपयोगियों व प्रतिष्ठासूचक मानते हैं।

9. सामाजिक नियमों, परम्पराओं, स्तरों तथा अपेक्षाओं के अनुरूप काम करना सामाजिक अनुरूपता कहलाता है। सामाजिक अनुरूपता के कारण व्यक्ति सामाजिक नियमों तथा अपेक्षाओं के अनुरूप काम करना सीख जाता है।

10. सफल सामाजिक जीवन के लिए अनुशासन अनिवार्य है। मूल्यों द्वारा आन्तरिक, आत्मानुभूत, स्वेच्छापूर्ण, स्वीकारात्मक एवं निर्माणात्मक अनुशासन का विकास होता है।

11. मूल्यों द्वारा व्यक्ति सामाजिक न्याय के पक्ष में होता है।

12. मूल्यों द्वारा व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, पड़ोसियों तथा अन्य सहकर्मियों के प्रति वफादार होता है और स्वार्थ से ऊपर उठकर परहित के लिए काम करता है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय समाज को मूल्य केवल नियम नहीं, बल्कि जीवन का आधार हैं। आज आवश्यकता है कि परंपरागत आध्यात्मिकता और आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों का समन्वय किया जाए। मूल्य शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे भारतीय समाज अपने सन्तुलन को बनाए रख सकता है।

❑❑❑